Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 15th Oct. 2019, Revised on 27th Oct. 2019; Accepted 29th Oct. 2019

आलेख

शिक्षक सशक्तिकरण एवं शिक्षा में गुणवत्ता सुधार

* विनिता कुमारी मित्तल
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, जिला–सवाई माधोपुर(राज.) 322201
Email-dineshg.gupta397@gmail.com, Mob.- 9462607259

मुख्य शब्द *- शिक्षक सशक्तिकरण, गुणवत्ता विकास, वृत्तिक विकास आदि।*

सारांश

परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में, समझ तथा सहनशीलता प्रोत्साहित करने में शिक्षक की भूमिका का महत्व जितना आज स्पष्ट है, उतना कदापि न था। इक्कीसवीं शताब्दी में तो यह और भी अधिक संवेदनशील होने वाला है।संकीर्ण राष्ट्रीयता से सार्वभौमिकता, जातीय एवं सांस्कृतिक पक्षपात से उदारता, सूझबूझ व बहुलवाद, एकतन्त्र से लोकतन्त्र की विभिन्न अभिव्यक्तियों तथा प्रौद्योगिकीय रूप से विभाजित विश्व, जहां उच्च प्रौद्योगिकी केवल कुछ ही का विशेषाधिकार है, से प्रौद्योगिकीय रूप से संयुक्त संसार की ओर परिवर्तन की आवश्यकता उन अध्यापकों पर बहुत बड़े दायित्व लादती है जो नवीन पीढ़ी के चरित्र व मन के निर्माण में भाग लेते हैं। जोखिम तो भारी है, तथा बचपन एवं जीवन भर में निर्मित नैतिक मूल्य विशेष महत्व के बन जाते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार प्रथमतः शिक्षकों का प्रशिक्षण, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा कार्य स्थितियों पर निर्भर करता है; यदि उन्हें अपने पर लादी गई अपेक्षाओं को पूर्ण करना है, तो उनके लिए उपयुक्त ज्ञान एवं कौशलों, वैयक्तिक गुणों, व्यावसायिक भविष्य तथा प्रेरणा आवश्यक है। युवा लोगों को न केवल आत्मविश्वास के साथ भविष्य का सामना करने हेतु तैयार करने, वरन् इसका उद्देश्यपूर्ण तथा दायित्वपूर्ण निर्माण करने में भी शिक्षकों को निर्णायक भूमिकाएं निभानी हैं। शिक्षा के समक्ष नई चुनौतियों विकास में योगदान देने, लोगों को समझने तथा किसी सीमा तक सार्वभौमिकीकरण के तथ्य के साथ समझौता करने, तथा सामाजिक संसक्ति विकसित करने का सामना तो आवश्यक रूप से प्राथमिक एवं माध्यमिक पाठशाला से ही किया जाना चाहिए। शिक्षक तो अधिगम के प्रति सकारात्मक अथवा नकारात्मक अभिरुचियों के विकास में सहायक होते ही हैं। शिक्षक जिज्ञासा जागरित, स्वतन्त्रता प्रेरित, बौद्धिक कठोरता प्रोत्साहित तथा औपचारिक एवं सतत् शिक्षा में सफलता के लिए परिस्थितियां भी रचित कर सकते हैं।

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करके उसे सुसंस्कृत बनाने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के साथ–साथ सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के लिए भी आवश्यक है। ''सुभाषित रत्न'' में उचित ही लिखा है कि ''ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है, जो उसे समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता हैं तथा सही कार्य करने की विधि बताता है।'' हमारे काव्य महाभारत में भी वर्णित हैं कि–''विद्या के समान नेत्र तथा सत्य के समान कोई दूसरा तप नहीं हैं।'' शिक्षा विनय प्रदान करती हैं, विनय से पात्रता आती है, पात्रता से व्यक्ति धन अर्जन करता है, धन से धैर्य तथा अन्ततोगत्वा सुख की प्राप्ति होती है। शिक्षा का नाम स्मरण करते ही शिक्षक की कल्पना स्वतः ही साकार हो उठती हैं। शिक्षक ही शिक्षा प्रक्रिया की सार्थकता को सिद्ध करता हैं। शिक्षा प्रक्रिया के तीन ध्रुवों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। आदिकाल से ही शिक्षक की तुलना ईश्वर से की जाती रही है। क्योंकि जिस प्रकृति का शिक्षक होगा, उसी प्रकृति का राष्ट्र का भविष्य होगा।

विद्यालय में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से होता है। शिक्षक बालकों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होता है। वह छात्रों को प्रगति की राह दिखाने वाला एक पथ प्रदर्शक होता है। शिक्षक न केवल कक्षा में अपितु विद्यालय में उचित वातावरण का निर्माण करता है। सभी बालकों के प्रति उदार, पक्षपात रहित व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार रखता है। शिक्षक बालकों की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं व प्रकृति के अनुसार शिक्षक शिक्षण पद्धति अपनाता है। विद्यालय में किसी भी क्रिया को सिखाने का दायित्व शिक्षक का होता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है, अतः शिक्षक को शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सिद्धहस्त होना आवश्यक है।

चूंकि छात्र शिक्षक को आदर्श मानता है इसलिए छात्र के गुणों जैसे अध्ययनशीलता, ईमानदारी, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता आदि के विकास का दायित्व उस पर होता है। साथ ही वह छात्रों में उनकी अभिरूचि व क्षमताओं के अनुकूल भविष्य के क्षेत्रों जैसे प्रशासनिक, प्रबन्धन, तकनीकी, वैज्ञानिक, व्यावसायिक आदि का निर्धारण करने में सहायक होता है। विलियम जेम्स ने कहा भी है ''शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य उन आदतों को छांटना और लिखना है जो बालक के लिए सारे जीवन सबसे अधिक लाभप्रद रहे।'' इस तरह शिक्षक न केवल सकारात्मक सोच वाले नागरिकों को बनाते है बल्कि समाज व देश की दशा दिशा को भी प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करने में महती भूमिका निभाते हैं। शिक्षक उसी समाज का हिस्सा है जो मूल्यों का महत्व समझता तो है पर उन्हें धारण नहीं कर पाता।

शिक्षा के सभी पक्षों में शिक्षक एक महत्वपूर्ण कड़ी है। यहां तक कि शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक है। पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षण विधियों का निर्धारण, छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन, छात्रों को प्रोत्साहित करना सभी कार्य शिक्षक की प्राथमिकताऐं हैं। इसके लिए आवश्यक हैं कि शिक्षक स्वयं चरित्रवान, प्रतिभाशाली तथा योग्य होना चाहिए। शिक्षक छात्रों का सच्चा मित्र तथा पथ प्रदर्शक हो, अपने आचरण द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षित करें तथा स्वयं श्रेष्ठ गुणों से युक्त हो।

शिक्षक का कार्य भविष्य की पीढ़ी का निर्माण करना है। इस हेतु शिक्षक को स्वयं सामर्थ्यवान तथा योग्यताधारी होना आवश्यक है। एक प्रभावी, शिक्षक से निम्न योग्यताओं की अपेक्षा की जा सकती है।

1. शिक्षक सद्आचरण सम्पन्न होना चाहिए।
2. शिक्षक ज्ञानवान, विवेकवान एवं संस्कार सम्पन्न हो।
3. शिक्षक प्रभावी सम्प्रेषण कला से युक्त हो।
4. शिक्षक का जीवन मूल्योन्मुखी हो तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों तथा विचारों में आस्था हों।
5. शिक्षक बाल मनोविज्ञान तथा किशोर मनोविज्ञान का ज्ञाता हो।
6. शिक्षक अपने छात्रों से आत्मीय सम्बन्ध रखता हो।
7. वह नवीन शिक्षण विधियों का ज्ञाता हो तथा इनका प्रयोग कुशलापूर्वक करने में समर्थ हो।
8. शिक्षक छात्रों को अभिप्रेरित करने में समर्थ हों।
9. शिक्षक अध्यापन केन्द्रित की अपेक्षा अध्ययन केन्द्रित व्यवस्था पर विश्वास रखता हों।
10. शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता हो साथ ही विभिन्न विषयों की सामान्य जानकारी रखता हो।
11. शिक्षक सृजनशील हो।

उपरोक्त विशेषताओं से युक्त शिक्षक एक सशक्त, प्रभावी, योग्य तथा सम्माननीय शिक्षक कहलाता है। परन्तु आज शिक्षक शिष्य को योग्य सभ्य, तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाने के उत्तरदायित्व को सफलतापूर्वक वहन नहीं कर पा रहे हैं। इसका प्रमुख कारण हैं शिक्षक को शिक्षण हेतु उन्नत परिस्थितियां उपलब्ध न हो पाना, शिक्षक पर प्रबन्धतंत्रीय एवं राजनैतिक दबाव होना, स्वयं शिक्षक का अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक न होना, शिक्षकों की शिक्षण के प्रति रूचि का अभाव शिक्षक प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त

व्यक्तियों का चयन न हो पाना तथा शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उचित रीति से संचालन का अभाव होना। शिक्षा प्रक्रिया को प्रेरक बनाने हेतु तथा छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु दक्ष शिक्षा व्यवस्था के साथ–साथ, दक्ष, कुशल एवं सशक्त शिक्षकों की नितांत आवश्यकता है।

शिक्षक सशक्तिकरण का अर्थ

शिक्षक सशक्तिकरण वह प्रक्रिया हैं जिसमें संदर्भित शैक्षिक परिवेश के सापेक्ष शिक्षकों की योग्यता, क्षमता, सामर्थ्य, प्रभावशीलता, सृजनात्मकता, कल्पना, नियंत्रण, प्रबंधन, स्वमूल्यांकन एवं स्वसंयमन की क्षमताओं का संवर्धन किया जाता है। शिक्षक सशक्तिकरण आन्तरिक ऊर्जा का प्रश्न है वह न्यायाधीश की तरह निष्पक्ष, चिकित्सक की भांति सेवक, संन्यासी की तरह निर्भीक, सेनानायक की तरह साहसी हो। शिक्षक सशक्तिकरण में यह तथ्य स्वीकृत मानकर चलना होता है कि शिक्षक की व्यावसायिक नैतिकता का आधार केवल सामाजिक तथा मानवीय गुण ही हो सकते हैं। ये गुण शिक्षक सशक्तिकरण हेतु शाश्वत है ताकि इन गुणों का सदैव महत्व रहा हैं।

शिक्षक सशक्तिकरण के विविध आयाम

शिक्षक सशक्तिकरण एक बहुआयामी संकल्पना है। इसके अन्तर्गत शैक्षिक सुधारों के समस्त पक्षों का समावेश किया जाता है। शिक्षक सशक्तिकरण का मुद्दा शिक्षक की सामर्थ्य, प्रवीणता एवं उसकी प्रभाविता से प्रत्यक्षतः सम्बन्धित है शिक्षा के नये प्रतिमान को स्वीकृत एवं क्रियान्वित किए जाने के क्रम में एक बहुआयामी सशक्त शिक्षक की नितांत आवश्यकता होती है शिक्षक सशक्तिकरण के निम्न विविध आयाम है–

1. विषय आधारित सशक्तिकरण

एक सशक्त व प्रभावी शिक्षक को केवल यही जानकारी न हो कि ''कैसे पढ़ाया जाए'' अपितु उसे यह भी ज्ञान हो कि किस प्रकरण में क्या पढ़ाया जाना अपेक्षित है। प्रभावी शिक्षक को अपने विषय का ज्ञाता होने के साथ–साथ सभी अन्य विषयों का सामान्य ज्ञान भी होना चाहिए। प्रभावी शिक्षक अपने विषय की जानकारी के साथ–साथ सामान्य ज्ञान में भी प्रवीणता रखता हो जिससे वह विविध प्रकरणों की सुस्पष्ट व्याख्या करने के लिए विविध प्रसंगों, सन्दर्भों तथा उदाहरणों की सहज रूप में सहायता ले सकता है।

2. शैली आधारित सशक्तिकरण

शिक्षक की शैली आधारित सशक्तिकरण से तात्पर्य उसकी उस पहल से है जिसके माध्यम से वह विषयवस्तु एवं विद्यार्थी से प्रभावी सम्बन्ध स्थापित कर लेता है इसमें शिक्षक को संगठित व्यवहार की शैली अपनाने को प्रेरित किया जाता है जिससे वह शिक्षण में व्यवस्था, क्रमबद्धता, आत्मविश्वास का वरण कर लेता है। सशक्तिकरण द्वारा शिक्षकों को अपने व्यवहार में गतिशीता, नम्रता तथा सृजनशीलता हेतु भी प्रेरित किया जाता है। जिससे वे नए मानक तथा प्रतिमान बनाने में समर्थ होते हैं, नए मार्ग पर चलते हैं तथा कुछ नया एवं भिन्न का सृजन करते हैं, फलस्वरूप विलक्षण ऊर्जा, उत्साह एवं शक्ति से विधार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

3. व्यवहार आधारित सशक्तिकरण

शिक्षक सशक्तिकरण का तीसरा आयाम उसका व्यवहार आधारित सशक्तिकरण है जिसके अन्तर्गत शिक्षक मुख्य रूप से नियोजन, अनुदेशन, सम्प्रेषण, प्रबन्धन तथा मूल्यांकन की योग्यताऐं अर्जित करता है। स्पष्ट नियोजन, प्रभावी अनुदेशन, त्रुटिरहित सम्प्रेषण, प्रबन्धन तथा मूल्यांकन की योग्यत अर्जित करता है। स्पष्ट नियोजन, प्रभावी अनुदेशन, त्रुटि रहित सम्प्रेषण तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन एक सामान्य शिक्षक को सशक्त शिक्षक की ओर उन्मुख करता है।

वृत्तिक विकास की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षकों के वृत्तिक विकास से सम्बन्धित दस्तावेजों में सामान्य रुप से लिखा हुआ है कि "शिक्षकों का वृत्तिक विकास कोई घटना नहीं है बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है"। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षण एक व्यवसाय है और इसके कुछ व्यावसायिक दायित्व होते हैं। कभी–कभी ये दायित्व आचार–संहिता के रुप में लिखे होते हैं लेकिन अधिकांशतः करार के रुप में होते हैं। शिक्षण व्यवसाय में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। भारत में ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005'' ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आमूल–चूल परिवर्तन किया है। इसने शिक्षकों की भूमिका को भी प्रभावित किया है। ऐसे कई नीतिगत परिवर्तनों ने शिक्षकों की भूमिका को परिवर्तित किया है।

शिक्षकों के सतत प्रशिक्षण या उन्मुखीकरण की आवश्यकता पर पुनः विचार करने की आवश्यकता है जो विविध नीतियों एवं परिवर्तनों को शिक्षण–अधिगम में क्रियान्वित करने में शिक्षकों की सहायता कर सके।

इस समस्या का समाधान शिक्षकों का सतत वृत्तिक विकास है। शिक्षकों के वृत्तिक विकास में सिर्फ उन्हें नए सम्प्रत्ययों को सीखने का अवसर देना या शिक्षण–अधिगम की नई विधियों को अपनाने का अवसर देना ही नहीं शामिल है बल्कि इसमें शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की बदलती परिस्थितियों का सामना करने के लिए शिक्षकों में दक्षता का विकास करना तथा शिक्षार्थियों के लाभ हेतु श्रेष्ठ चीजों को अपनाना भी शामिल है। वृत्तिक विकास, शिक्षक के कार्य–प्रणाली/उपागाम, अभिवृत्ति, अधिगम के स्तर की समझ तथा उसमें वृद्धि के लिए किए जानेवाले अभ्यास में परिवर्तन लाना है। वो प्रक्रिया जिसके द्वारा शिक्षक परिवर्तन के कारकों के प्रति अपने वादों का पुनरीक्षण, नवीनीकरण एवं विस्तार करते हैं तथा जिसके द्वारा वे ज्ञान, कौशल, नियोजन एवं अभ्यास को प्रेरित करते हैं तथा अपने शिक्षण जीवन की प्रत्येक अवस्था द्वारा उसका विकास करते हैं। शिक्षकों का व्यावसायिक विकास विद्यालय की परिधि के भीतर शिक्षकों को उनके कार्य के लिए तैयार करने के लिए, जिसमें कि प्रारम्भिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा सतत वृत्तिक विकास शामिल हैं, का एक व्यवस्थित निकाय है। शिक्षकों के वृत्तिक विकास की आवश्यकता को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

- विषय ज्ञान के विस्तार हेतु;
- बदली हुई शिक्षण विधियों के कारण
- मीडिया की बढ़ती हुई सहभागिता के कारण
- सूचनाएं एवं संप्रेषण तकनीकी (आई.सी.टी.) के उपयोग पर विशेष ध्यान के कारण
- नीतियों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के कारण
- समाज एवं राष्ट्र की आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु।

शिक्षक का वृत्तिक विकास

शिक्षक का वृत्ति विकास शिक्षक के जीवन का अभिन्न अंग है और यह जीवन पर्यन्त होता है। अधिकांश शिक्षक वृत्ति विकास के लिए सरकार द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण प्रोग्राम में भागीदारी लेकर अपने वृत्ति का विकास करते हैं परन्तु सरकार के अलावा भी ऐसे कई तरीके हैं जिससे शिक्षक अपनी वृत्ति विकास कर सकता है। आज का युग तकनीकी सम्प्रेषण का युग है और इन्टरनेट एक बहुत बड़ा साधन है जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपने क्षेत्र में हो रहे नए ज्ञान का सृजन एवं जानकारी घर बैठे ही प्राप्त कर सकता है। इन्टरनेट की सुविधा का लाभ उठाकर वह विभिन्न वेबसाईट में दी हुई सूचना को अर्जित कर अपने शिक्षण–अधिगम में प्रयोग कर सकता है। ऑनलाईन अधिगम द्वारा नाना प्रकार के कोर्स में प्रवेश लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है एवं इसके अपने ज्ञान को इन्टरनेट की दुनिया के द्वारा दूसरों को लाभ पहुँचा सकता है। ऑनलाईन के द्वारा सहयोगात्मक समूह तैयार करके ज्ञान का आदान– प्रदान किया जा सकता है संगोष्ठियों का आयोजन एवं भागीदारी करके भी शिक्षक अपने वृत्ति में विकास कर सकता है। इसके अतिरिक्त अखबारी शोध– पुस्तिका इत्यादि में लेखन शोध पत्र लिखकर भी वृत्ति विकास किया जा सकता है सतत वृत्तिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिक्षक और अधिक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए कौशलों को प्राप्त करते हैं,

विकसित करते हैं तथा उन्हें सशक्त करते हैं। यह निरंतर परिवर्तित होते रहने वाली व्यावसायिक वातावरण के प्रति अनुक्रिया है तथा अनवरत चलनेवाली प्रक्रिया है।

ज्ञान का नूतनीकरण

सतत वृत्तिक विकास नए ज्ञान की प्राप्ति तथा उस ज्ञान का प्रयोग पूर्व ज्ञान के विकास हेतु करने में शिक्षकों की सहायता करता है। सिर्फ अपने विषय क्षेत्र में हीं नहीं बल्कि शिक्षण विधियों एवं तकनीकी के क्षेत्र में भी निरन्तर नए ज्ञान का विकास हो रहा है। उदाहरण के तौर पर, निकट अतीत में हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हुए आमूल चूल परिवर्तन व्यवहारवादी उपागम के स्थान पर संरचनात्मक उपागम का अपनाया जाना हम सबने अनुभव किया। नए आविष्कार एवं नवाचार विविध विषयों में ज्ञान के संग्रह को बढ़ावा दे रहे हैं। विज्ञान, कला एवं सामाजिक विज्ञान, आदि सभी विषयों के ज्ञान क्षेत्र में निरंतर वृद्धि हो रही है और एक शिक्षक को इन सब विकास की तकनीकी जानकारी रखनी पड़ती है। शिक्षक होने के नाते हम अपने विषय क्षेत्र में होने वाले ज्ञान के इस विकास से अनजान नहीं रह सकते हैं। जो शिक्षक अपनी जानकारी अद्यतन रखता है उसका आत्मविश्वास का स्तर ऊँचा होता है तथा वो अपने सहकर्मियों एवं शिथार्थियों में सम्मान पाता है। एक शिक्षक अपने शिक्षार्थियों के प्रश्नों का भली–भाँति उत्तर दे पाता है यदि वह अपने क्षेत्र में हो रहे विकास से अवगत रहता है।

कक्षाकक्ष शिक्षण में सुधार

एक अच्छा शिक्षक सिर्फ एक अच्छा सम्प्रेषक ही नहीं होता है बल्कि अधिगम को आसान बनाने वाला भी होता है। वह सिर्फ अध्यापन ही नहीं करता है बल्कि कक्षाकक्ष अनुभवों से सीखता भी है। वह नवाचारों, नवीन तकनीकों एवं प्रविधियों का शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग करने का प्रयास भी करता है। इस प्रकार वह अपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करता है।

नवोदित चुनौतियों का सामना करना

आजकल के शिक्षक शिक्षण एवं अधिगम की नई विधियों को अपनाने के लिए बाध्य हैं। वे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में तकनीकी के समावेशन के लिए भी बाध्य हैं। ये सारी प्रवृत्तियाँ शिक्षकों के सामने चुनौती उत्पन्न करती हैं। अनुशासन बनाए रखने के लिए शारीरिक दण्ड के प्रावधान के बिना कक्षाकक्ष का प्रबंधन करना, संरचनात्मक मूल्यांकन करना, समावेशी कक्षाकक्षों में अध्यापन करना, आदि भी चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। कक्षाकक्ष में शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं का समाधान करना, लिंग, जाति, धर्म, प्रजाति, आदि के आधार पर कक्षाकक्ष में समता स्थापित करना, कक्षाकक्ष को समावेशी बनाना, शारीरिक दण्ड के स्थान पर विधेयात्मक अनुशासन को अपनाना, मानवीय मूल्यों का संवर्धन तथा सामाजिक न्याय को अपनाने जैसी चुनौतियों का सामना शिक्षक को वर्तमान समय की कक्षाओं में करना पड़ता है। बहुत सारे शिक्षक इन नवाचारों को अपनाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उदाहरण के तौर पर, कुछ शिक्षक जो पारम्परिक शैक्षिक प्रणाली में लंबे समय में कार्यरत हैं नए तकनीकों के प्रयोग में सहजता का अनुभव नहीं करते हैं तथा तकनीकी समर्थित शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अपनाने के प्रति अनिच्छुक है। दूसरी ओर बच्चों द्वारा तकनीकी के बढ़ते हुए प्रयोग के कारण शिक्षकों को यह महसूस होने लगा है कि वो उनको पढ़ाने के लिए समुचित रुप से दक्ष नहीं है।

वृत्तिक सम्बन्धोंका निर्माण

वर्तमान समय अतीत की भाँति प्रतियोगिता एवं व्यक्तिगत रुप से कार्य करने के बजाय आपसी सहयोग का है। मिलजुल कर कार्य करना, संसाधनों का साझा प्रयोग करना, एवं आपसी सम्बन्धों का निर्माण व्यक्ति के कार्य करने की क्षमता को बढ़ाता है। सतत वृत्तिक विकास के द्वारा शिक्षक आपसी सहयोग एवं मिलजुल कर कार्य करने की योग्यता एवं अभिवृत्ति प्राप्त करते हैं। इसलिए सूचनाओं, विचारों तथा अनुभवों को साझा करने में तकनीकी समर्थित सम्पर्क, परियोजनाओं को पूरा करने में आपसी सहयोग, आदि आवश्यक है। वृत्तिक सम्पर्क की आवश्यकता सिर्फ शैक्षिक लाभ हेतु ही नहीं है बल्कि व्यावसायिक

मुद्दों पर सामूहिक रुप से चर्चा और प्रतिक्रिया करने के लिए भी है। ऐसी वृत्तिक सम्पर्क प्रणाली में अधिक ज्ञानी एवं अनुभवी सहकर्मी प्रभावी निर्देशन एवं सुझाव प्रदान कर सकते हैं। सतत वृत्तिक विकास का अवसर हमें तकनीकी आधारित सम्पर्क के निर्माण तथा उस सम्पर्क का व्यावसायिक रुप से लाभ उठाने के योग्य बनाता है। आजकल वृत्तिक विकास के लिए किए जाने वाले आजीवन अधिगम जैसे स्वप्रयास भी आवश्यक है।

इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान में वृद्धि

बहुत से राष्ट्रों में स्कूलों की भूमिका एवं कार्यों में परिवर्तन आया है एवं इसी कारण शिक्षकों के कार्य में भी परिवर्तन आया है। आज के शिक्षकों से यह उम्मीद की जाती है कि वह बहु–संस्कृतीय कक्षाओं में शिक्षण कार्य सम्पन्न करें, समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विशिष्ट छात्रों को शिक्षा प्रदान करें, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का प्रभावी रूप से कक्षा में शिक्षण के उपयोग करें, मूल्यांकन एवं जवाबदेही ढाँचे के लिए योजना बनाने में अधिक से अधिक संलग्न रहें एवं स्कूलों को समाज के साथ जोड़ने का प्रयत्न करते रहें। शिक्षकों की पूर्व सेवा प्रशिक्षण कितनी भी अच्छी क्यों न हो, परन्तु यह उम्मीद करना कि शिक्षकों को आने वाले व्यवसाय में सभी तरह की चुनौतियां का सामना करने का प्रशिक्षण दिया जा सकती है यह असम्भव है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण के स्तर को बनाए रखने के लिए एवं उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षकों को व्यवस्था में बनाए रखने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन्हें समय – समय पर सेवाकालीन व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

सेवाकालीन प्रशिक्षण के मुख्य उद्देश्य

1.अपने विषय–वस्तु पर हुए नए ज्ञान के बारे में जानकारी रखना।

2.शैक्षिक अनुसंधानों में हुई नई शिक्षण तकनीकी कौशलों, दृष्टिकोणों एवं उद्देश्यो के बारे में ज्ञान अर्जित करना।

3.पाठ्यक्रम शिक्षण पद्धति के विभिन्न आयामों में किए गए परिवर्तनों की प्रयोग करने के लिए शिक्षकों में क्षमता का निर्माण करना।

4.अपने विषय–वस्तु में अर्जित ज्ञान, कौशल शिक्षण पद्धति एवं तकनीक इत्यादि का कक्षा में छात्रों के लिए उपयोग करना।

आज के युग में जहाँ नए ज्ञान का सृजन एवं प्रसार सूचना एवं प्रसार के माध्यम से त्वरित होते हैं वहां सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए निर्भर रहना ठीक नहीं है। शिक्षक को चाहिए कि इन्हीं सूचना एवं प्रसार तकनीक का प्रयोग करके वह समय–समय पर अपना व्यवसायिक विकास करता रहे। इन्टरनेट संचार एवं प्रसारण तकनीक का अभिन्न अंग है। यह कहना असत्य नही होगा कि सूचना एवं प्रसारण तकनीक इन्टरनेट का ही पर्यावाची शब्द बन गया है। आज विभिन्न प्रकार की सेवाऐं इसी इन्टरनेट के प्रयोग से लोगों तक पहुँचाई जा रही है। चाहे वह बैंक में खाता खोलना हो या रूपयों का स्थानांतरण करना हो या घर बैठे सामान की खरीददारी करना हो या रेलवे या हवाई जहाज का टिकट खरीदना हो इन सभी एवं विभिन्न प्रकार के सेवाओं के लिए इन्टरनेट का प्रयोग होता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्टरनेट का प्रयोग लम्बे समय से हो रहा है। मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त विद्यालय इन्टरनेट का प्रयोग करके छात्रों तक विभिन्न तरह की सेवायें प्रदान कर रहे हैं जैसे – नाना प्रकार के प्रोग्राम में प्रवेश देना, परीक्षा लेना, परिणाम घोषित करना इत्यादि। पिछले एक दशक में शिक्षा में इन्टरनेट का प्रयोग बहुत तीव्रगति से हुआ है। फलस्वरूप अब सभी प्रकार की किताबें, शोध लेख, सरकारी आलेख, इत्यादि अब इन्टरनेट की दुनिया में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो रही है। इसका लाभ यह हुआ है कि ज्ञान का विस्फोट होने लगा है और अब हम इन्टरनेट को एक सशक्त अधिगम का माध्यम मानने लगे हैं। इन्टरनेट की दुनिया में कई ऐसे वेबसाईट हैं जिनका काम शिक्षा में आए हुए नए–नए परिवर्तनों को प्रकाशित करना एवं लोगों तक प्रसार करना ही एक सूत्र कार्यक्रम है।

शिक्षक को शिक्षण प्रक्रिया का एक स्तम्भ माना जाता है। अगर वह अपने आप को इस नवाचार से दूर रखेगा या इन्टरनेट की दुनिया से दूर रहेगा तो अपने ज्ञान, कौशल में वृद्धि नही कर पायेगा एवं छात्रों को होने वाले लाभ से वंचित रखेगा। अतः शिक्षक के लिए अत्यन्त आवश्यक है कि अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए इन्टरनेट का प्रयोग करें,

इन्टरनेट का प्रयोग करके शिक्षक निम्नलिखित व्यावसायिक विकास में लाभ उठा सकता है :–

1. बहुत सारे शिक्षण संस्थान विभिन्न विषय–वस्तुओं पर कोर्स तैयार करके इसे कम–कीमत अथवा मुफ्त में ऑनलाईन दे रहे हैं, शिक्षक इन कोर्स में प्रवेश लेकर अपना ज्ञानवर्धन कर सकते हैं।

2. बहुत सारे विषय–विशेषज्ञों ने विभिन्न विषय–वस्तुओं पर दिए हुए अपने व्याख्यानों को यू–ट्यूब अथवा किसी वेब पोर्टलों में रखा है जिसे देख एवं सुनकर शिक्षक न केवल अपना ज्ञान–वर्धन कर सकते हैं अपितु उसे अपने शिक्षण कार्य में भी प्रयोग कर सकते है।

3. विषय–वस्तुओं से जूड़े हुए बहुत सारे नवाचार एवं अनुसंधान भी इन्टरनेट में उपलब्ध है जिन्हे पढ़कर शिक्षक अपना व्यावसायिक विकास कर सकता है।

4. शिक्षण–पद्धति, सम्प्रेषण कौशल, समावेशी शिक्षा, सूचना एवं प्रसारण तकनीक मे नवाचार, तकनीक का शिक्षा में प्रयोग एवं अन्य विभिन्न विषयों में आ रहे परिवर्तन एवं नवाचार के बारे में ज्ञान अर्जित करना एवं उसका प्रयोग शिक्षण संस्थान, छात्रों एवं सह–शिक्षकों को लाभ पहुँचाने हेतु शिक्षक कर सकते है।

5. इन्टरनेट की दुनिया में अनेक सारे संस्थान हैं जो कठिन प्रकरण को छात्रों को कैसे पढ़ायें इसके बारे में भी जानकारी देते हैं जिसे शिक्षक आत्मसात करके अपनी कक्षा में सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता है।

6. शिक्षकों की दक्षता एव क्षमता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रोग्राम का वीडियों में तैयार करके इन्टरनेट में उपलब्ध कराया जा रहा है जिससे अधिक से अधिक शिक्षक लाभन्वित हो सकें।

7. इन्टरनेट की मदद से शिक्षक अर्जित किया ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार दूसरे शिक्षको को भी कर सकता है जिससे शिक्षक को अनेक प्रकार के लाभ हो सकते है।

संगोष्ठी एंव सम्मेलन में शिक्षक की सहभागिता

व्यावसयिक विकास किसी भी व्यवसाय के लिए अनिवार्य होता है। शिक्षक–शिक्षा क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्णता और अधिक हो जाती है क्योंकि शिक्षक अपने ज्ञान एवं कौशल से छात्र के भविष्य का निर्माण करता है और वही छात्र देश के निर्माण एवं सृजन के लिए जिम्मेदार होता है, यह कहना असत्य नहीं होगा कि शिक्षक ही राष्ट्र का निर्माता होता है, इस बात का प्रमाण हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में लिखे हुए इस कथन से मिलता है कि :– कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊँचा नही हो सकता है शिक्षक की सतत् व्यावसायिक विकास का मुददा आज से करीब 50 वर्ष पूर्व कोठारी कमिशन की रिपोर्ट में कहा गया था उसके बाद शिक्षक सम्बन्धी राष्ट्रीय आयोग (1983–85) की रिपोर्ट ने इस ओर ध्यान दिलाया कि सेवाकालीन शिक्षा को लेकर ठोस नीति और प्राथमिकता का अभाव है और साथ ही शिक्षक भी आवश्यकताओं को व्यवस्थित ढ़ंग से नही पहचान पाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) जो शिक्षा के लिए एक मील का पत्थर साबित हुई, इस के अनुसार सेवाकालीन शिक्षक–शिक्षा को सेवारत शिक्षा से सतत् रूप से जोडा जाए, भारत में मुख्यतः शिक्षक का व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण प्रोग्राम द्वारा किया जाता है जो कि कम से कम एक सप्ताह से लेकर, अधिक से अधिक तीन सप्ताह के होते हैं। इन प्रशिक्षण प्रोग्रामों को कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित किया जाता है। यह अधिकतर राज्य एवं केन्द्र सरकार स्कूलों में कार्यरत शिक्षकों के लिए आयोजन करती है, इनमें मुख्यतः जिन विषय–वस्तुओं का चुनाव किया जाता है व समकालीन विषयों से जुडा हुआ होता है, जैसे समावेशी शिक्षा एवं शिक्षण पद्धति, सूचना एवं प्रसारण प्रौद्योगिकी का शिक्षा में प्रयोग, रचनात्मक शिक्षण पद्धति, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन इत्यादि, यह सब प्रशिक्षण प्रोग्राम मानकीकृत शिक्षक व्यावसायिक विकास प्रतिमान के अन्तर्गत किये जाते हैं जहाँ कुछ शिक्षक को प्रशिक्षण देकर उन्हे मास्टर ट्रेनर बनाकर बाकी स्कूलों में भेजा जाता है जहाँ ये स्थानीय शिक्षकों को प्रशिक्षण देते हैं।इसके अलावा व्यावसायिक विकास के लिए शिक्षक संगोष्ठी एवं सम्मेलन में सहभागिता लेकर भी अपना विकास कर सकते हैं।

ऑन–लाईन सहभागिता

ऑन–लाईन सहभागिता पिछले कुछ दशकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में अभूतपूर्व परिवर्तन आने के कारण नए ज्ञान का सृजन जो किताबों, पत्रिकाओं, अखबारों एवं विभिन्न प्रिंट मीडिया तक सीमित रहता था वह अब इलेक्ट्रोनिक एवं सामाजिक मीडिया में तीव्र गति से आ रहा है एवं लोगों तक आसानी से पहुँच रहा है ऐसे में शिक्षा एवं उसकी प्रक्रिया में उसका प्रभाव पड़ना निश्चित है। इसके लिए बहुत सारे व्यक्तिगत एवं सरकारी संस्थानों ने इसके शक्ति, क्षमता एवं प्रभाव को ध्यान में रखते हुए अब ऑनलाईन अधिगम पर जोर दिया जा रहा है। सूचना एवं संचार तकनीक के बदलते स्वरूप उसके प्रभाव का शिक्षण अधिगम क्रिया पर ही होने लगा है जिससे शिक्षक के व्यवसाय में पहले से अधिक चुनौतियाँ देखी जा सकती है। आज का छात्र इन तकनीक को प्रयोग करने में शिक्षक से बहुत आगे है जिससे उसके पास विषय–वस्तु पर कभी कभी शिक्षक से अधिक ज्ञान होता है, ऐसे में शिक्षक की जिम्मेदारी है वह भी इन तकनीको का सहारा लेकर अपने ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि करे जिससे वह अपने छात्र के समक्ष अथवा

उनके स्तर से अधिक ज्ञान अर्जित करके कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाए। ऑनलाईन सहभागिता शिक्षक व्यावसायिक विकास का नया आयाम है। इसमें शिक्षक जो अपने अनुभवों का प्रयोग करके नए ज्ञान का सृजन करते हैं अथवा जो ज्ञान ऑनलाईन की दुनिया में उपलब्ध है उसे अपने शिक्षक समूह के साथियों के बीच प्रचार प्रसार करते हैं जिससे शिक्षक भी उसका लाभ अपने लिए कर सकते हैं ऑनलाईन सहभागिता एक प्रकार का सहयोगात्मक अधिगम होता है जहां शिक्षक एक दूसरे से ऑनलाईन जुड़े हुए होते हैं एवं ज्ञान का सहभाजन एक दूसरे के बीच एवं अन्य शिक्षकों के बीच किया जाता है। इसमें लाभ की बात यह है कि विभिन्न विषयों में हो रहे परिवर्तन या नए ज्ञान का सृजन एक सामाजिक मीडिया जैसे फेसबुक, ट्विटर इत्यादि न केवल आपके विचारो को त्वरित गति से दूसरों तक पहुँचाता है अपितु इन ऑनलाईन मीडिया में इस बात की भी सुविधा है कि वीडियो, अभिलेख शोध–पत्र इत्यादि को भी दूसरे शिक्षकों तक पहुँचाया जा सकता है जिससे शिक्षक को विषय वस्तु से नई जानकारी प्राप्त होगी एवं उससे व्यावसायिक विकास में लाभ होगा।

शिक्षक सशक्तिकरण हेतु सुझाव

शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु शिक्षक सशक्तिकरण की नितांत आवश्यकता है। शिक्षक सशक्तिकरण हेतु कुछ प्रयास निम्नलिखित है–

1. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में गुणवत्ता के मानदण्डों का पालन कठोरता से किया जाए।
2. शिक्षक कक्षा में अपने आचरण से शिक्षा प्रदान करें।
3. शिक्षक उत्साहवर्धक, सहयोगी तथा मानवीय बने जिससे विद्यार्थी अपनी संभावनाओं का पूर्ण विकास कर जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाएं।
4. शिक्षक ऐसे व्यक्तियों के समूह का सक्रिय सदस्य बने, जो लगातार सामाजिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सजगता से पाठ्चर्या सुधार में रत हों।
5. सीखना किस प्रकार होता है, इसकी समझ उसमें हो और वह सीखने के अनुकूल वातावरण बनाये।
6. शिक्षक ज्ञान को व्यक्तिगत अनुभव के रूप में समझे जो सीखने–सिखाने के साझे अनुभव के रूप में प्राप्त किया जाता है, न कि पाठ्यपुस्तकों के बाह्य यथार्थ के रूप में।
7. शिक्षक में भाषा की गहरी समझ और दक्षता हो।
8. वह अपनी आकांक्षाओं, स्व समझ, क्षमताओं और रूझानों को पहचानें।
9. शिक्षक, छात्रों को कार्य के द्वारा विभिन्न विषयों का ज्ञान विविध मूल्यों तथा विविध कौशलों के विकास के साथ किस प्रकार प्राप्त होता है इसकी शिक्षा देना सीखें।
10. वह परामर्श के कौशल और क्षमताओं का विकास कर सके ताकि बच्चों के शैक्षणिक, व्यक्तिगत और सामाजिक स्थितियों का समाधान सुझाने में उसे सुविधा हो।
11. शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण, ओरिएन्टेशन तथा रिफ्रेशर कोर्स संचालित किये जायें।
12. शिक्षकों को दिए गए प्रशिक्षण का सैद्धांतिक तथा परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन न कर प्रत्येक कौशल का मूल्यांकन किया जाए।
13. शिक्षक प्रशिक्षण के लिए व्यावहारिक स्तर पर शोधों को प्रोत्साहन दिया जाये।
14. शिक्षक व्यवहार के मानदण्डों को पूर्व निश्चित करें तथा छात्रों से स्नेहिल एवं अनुशासित सानिध्य रखें। उपरोक्त सभी तथ्यों का शिक्षण प्रशिक्षण में पालन होने के बाद न सिर्फ शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर भी इसका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, शिरीष पाल (2008) "अध्यापक शिक्षा" ए.पी.एच. पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।

2. शर्मा, आर. ए. (2010). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

3. पाण्डेय, रामशकल (2008) "शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

4. सक्सेना, निर्मल. (2006) "शिक्षा एवं उदीयमान भारतीय समाज" मदन एण्ड कम्पनी, जयपुर।

5. ओड,एल. के. (2010) "शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

6.सेमवाल, कालिका प्रसाद (2017) "प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षक की भूमिका" प्रवाह, मई–सितम्बर,2015, पृ. 17–19.

7. मिश्र, मनोज (2017) "उदारीकरण,निजीकरण, वैश्वीकरण के सन्दर्भ में शिक्षक की स्थिति एवं उसकी भूमिका" शिक्षा विमर्श, मार्च 2017.

*** Corresponding Author:**
विनिता कुमारी मित्तल
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी, जिला–सवाई माधोपुर(राज.) 322201
Email-dineshg.gupta397@gmail.com, Mob.- 9462607259